International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 02-11-2024, Accepted: 03-12-2024, Published: 17-12-2024
Volume 10, Issue 6, 2024, Page No. 35-37

अकोड़ा (जिला भिण्ड) की जैन प्रतिमाएँ

मनोज कुमार[1], डॉ. संतोष शर्मा[2]
[1] इतिहास विभाग, महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] आचार्य, इतिहास विभाग, माधव महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
मध्यप्रदेश के सुदूर उत्तरी सीमांत पर चंबल संभाग के अंतर्गत भिण्ड जिले में स्थित अकोडा जैन पुरामहत्व की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में देखा जा सकता है। इस ग्राम के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में प्रस्तर एवं धातु से बनी कई जिन प्रतिमाएं पूजनीय अवस्था में विराजमान हैं। कालक्रम की दृष्टि से ये प्रतिमाएं लगभग १२वीं शती ईस्वी से लेकर १९वीं शती ईस्वी तक की निर्धारित होती हैं। ये प्रतिमाएं जैन प्रतिमाविज्ञान की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण न होकर अभिलेखों के संदर्भ में प्रासांगिक हैं।

मूल शब्द: सुपार्श्वनाथ, चंद्रपभ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महीपाल, जवणपाल, निवंदेव कुमर, काष्ठासंघ, वाराणसी, छेदीलाल

ग्राम अकोड़ा भिण्ड जिले एवं तहसील के अन्तर्गत जिला मुख्यालय से लगभग 20 किमी की दूरी पर भिण्ड–रौन सड़कमार्ग पर स्थित है। आकार एवं बसाहट की दृष्टि से यह भिण्ड जिले का एक बड़ा ग्राम है। इस गाँव में मुख्य सड़क के किनारे लगभग १९वीं शती ईस्वी के एक जीर्ण–शीर्ण भवन में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर संचालित है। वास्तु–योजना की दृष्टि से इस मन्दिर भवन के मध्यभाग में एक खुला चौक और उसके चारों ओर बरामदों का विधान हुआ है। मन्दिर में मुख्य द्वार से प्रवेश करने पर सम्मुखवर्ती बरामदे में एक शिखरबद्ध वेदी पर पाषाण एवं धातु से बनी जिन–प्रतिमाएं विराजमान हैं। स्थानीयजन इनकी नित्य पूजा–पाठ करते हैं। इनमें से अधिकांश प्रतिमाओं पर अभिलेख उत्कीर्ण हुए हैं। आधुनिक स्थिति में इस ग्राम में एक–दो जैन परिवार ही निवासरत हैं, जो मन्दिर में प्रतिदिन पूजा–अर्चना एवं रख–रखाव का कार्य करते हैं। इन प्रतिमाओं का विवरण निम्नवत् है–

पाषाणनिर्मित प्रतिमाएँ

इस मन्दिर में मुख्य वेदी पर प्रस्तर से बनी कुल पाँच प्रतिमाएँ विराजमान हैं। इन प्रतिमाओं में से सम्वत् 1234 की एक प्रतिमा काले प्रस्तर से और 4 प्रतिमाएं श्वेत संगमरमर पाषाण की बनी हुई हैं। संगमरमर से बनी सभी प्रतिमाओं पर सम्वत् 1548 तिथियुक्त लेख अंकित हैं। इन प्रतिमाओं में जिन चंद्रप्रभ, सुपार्श्वनाथ, अरनाथ और पार्श्वनाथ की पहचान की जा सकती है। लांछन के अभाव के कारण काले प्रस्तर से बनी प्रतिमा में जिन की पहचान संभव नहीं हो सकी है। जैन प्रतिमाविज्ञान की दृष्टि से ये सभी जिन प्रतिमाएँ साधारण लक्षणों से युक्त हैं। इनमें चार उदाहरणों में जिन पद्मासन मुद्रा में जबकि केवल एक उदाहरण में कायोत्सर्ग मुद्रा में प्रदर्शित हुए हैं। सभी उदाहरणों में जिन के वक्षस्थल पर श्रीवत्स का अंकन दिखाई देता हैं। इनमें से सम्वत् 1234 तिथ्यांकित जिन प्रतिमा विशिष्ट है, क्योंकि 12वीं शती ईस्वी में काले प्रस्तर से निर्मित इतने लघु आकार की प्रतिमाएँ काफी कम संख्या में देखी गई हैं। इन प्रतिमाओं का विवरण इस प्रकार है–

1. जिन (चित्र 1): लगभग 10 इंच ऊँचाई की काले प्रस्तर से निर्मित इस प्रतिमा में कायोत्सर्ग जिन सादी पीठ पर खड़े हुए हैं। परिकर में जिन के सिरोभाग के ऊपर केवल वृक्ष एवं त्रिछत्र अंकित हैं। कायोत्सर्ग जिन लंबकर्ण, नासाग्र–दृष्टि, आजानुबाहु, वक्षस्थल पर श्रीवत्स, ग्रीवा–रेखा, नाभि–रेखा आदि लक्षणों से पूर्ण हैं। यह प्रतिमा आंशिक रूप से खण्डित है। इस प्रतिमा पर नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा में संवत् 1234 (1177 ईस्वी) का अभिलेख अंकित हैं। इस लेख में साधु जल्हे के पुत्र निंवदेव, साधु कुमर के पुत्र महीपाल और जवणपाल द्वारा सदा प्रणाम करने का उल्लेख हुआ है। इस प्रतिमा के परिकर के सिरे पर अन्तिम पंक्ति के रूप में 'गाणे' अंकित है।

2. जिन पार्श्वनाथ (चित्र 2): श्वेत संगमरमर प्रस्तर से निर्मित इस प्रतिमा में 23वें जिन पार्श्वनाथ सिरोभाग पर सात सर्पफणों की छत्रावली से आच्छादित पदमासन मुद्रा में साधारण आसन पर आसीन है। आसन के मध्यभाग में उनका लांछन 'सर्प' निरूपित है। आसन पर अंकित विकृत नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा के संवत 1548 वैशाख सुदि 3 (1491 ईस्वी) के लेख में मूलसंघ के भट्टारक श्री जिनचन्द्र और श्री जीवराज पापड़ीवाल का उल्लेख हुआ है।

3. जिन सुपार्श्वनाथ: श्वेत संगमरमर पाषाण से बनी इस प्रतिमा में 7वें जिन सुपार्श्वनाथ पदमासन मुद्रा में सादे आसन पर विराजमान हैं। आसन के मध्यभाग में उनका लांछन 'स्वस्तिक' रूपांकित है। आसन पर नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा में संवत 1548 वैशाख सुदि 3 (1491 ईस्वी) के लेख में मूलसंघ के भट्टारक श्री जिनचन्द्र एवं श्री जीवराज पापड़ीवाल द्वारा प्रणाम–निवेदन करने का उल्लेख हुआ है।

4. जिन चंद्रप्रभ: श्वेत संगमरमर प्रस्तर से निर्मित इस प्रतिमा में तीर्थंकर चंद्रप्रभ पदमासन मुद्रा में साधारण आसन पर विराजमान हैं। आसन पर उनका लांछन 'चंद्र' एवं नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा के दो पंक्तियों के संवत् 1548 वैशाख सुदि 3 (1491 ईस्वी) के लेख में केवल तिथि पठनीय है।

5. अरनाथ: श्वेत संगमरमर पाषाण से बनी इस प्रतिमा में जिन अरनाथ पद्मासन मुद्रा में सादा आसन पर विराजमान दिखाया गया है। आसन पर उनका लांछन 'मत्स्य' अंकित है। आसन पर नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा के तीन पंक्तियों के संवत् 1548 वैशाख सुदि 3 (1491 ईस्वी) के लेख में केवल तिथि पढ़ी जा सकी है।

धातुनिर्मित प्रतिमाएँ

इस मन्दिर में धातु से बनी हुई 20 प्रतिमाएँ विराजमान हैं। ये प्रतिमाएँ लगभग 2 इंच से 7 इंच तक ऊँचाई की हैं। इनमें से अधिकांश प्रतिमाओं में 23वें जिन पार्श्वनाथ का निरूपण हुआ है। एक प्रतिमा त्रितीर्थी रूप में और एक में चंद्रप्रभ का अंकन दिखाई देता है। पार्श्वनाथ की प्रतिमाएँ पंचतीर्थी एवं एकल दोनों स्वरूपों में बनी हुई हैं। कालक्रम की दृष्टि से ये प्रतिमाएँ लगभग 13वीं शती ईस्वी से लेकर 17वीं शती ईस्वी तक की निर्धारित की जा सकती हैं। जैन मूर्तिशिल्प एवं प्रतिमाविज्ञान की दृष्टि से ये प्रतिमाएँ सामान्य लक्षणों से युक्त हैं। इनमें अधिकांश प्रतिमाओं में जिनों के मुख की भाव–भंगिमा अस्पष्ट हो चुकी है। अधिकांश उदाहरणों में उनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स का अंकन हुआ हैं। इनमें से 8 प्रतिमाओं पर अभिलेख अंकित हैं। ये प्रतिमाएँ काफी छोटे आकार की हैं। मुख्य प्रतिमाओं का विवरण निम्नवत् है–

1. पार्श्वनाथ–पंचतीर्थी (चित्र 3): इस प्रतिमा में मूलनायक जिन पार्श्वनाथ सिरोभाग पर सात सर्पफणों की छत्रावली से शोभित पद्मासन मुद्रा में ऊँचे सर्पासन पर विराजमान है। इस प्रतिमा में परंपरागत सिंहासन का विधान नहीं हुआ है। सर्पासन को ही सिंहासन का रूप दिया गया है। तोरणबद्ध परिकर में चार लघुकाय जिनों में से ऊपर के दो पद्मासन मुद्रा में और नीचे के दो कायोत्सर्ग मुद्रा में निरूपित हैं। सर्पासन के दायीं ओर यक्ष धरणेन्द्र और बायीं ओर यक्षी पद्मावती दोनों द्विभुजी स्वरूप में स्थानक मुद्रा में स्थापित हैं। उनके हाथों की वस्तुएं स्पष्ट नहीं हैं। पीठ पर सांकेतिक रूप में नवग्रहों ओर एक स्थानक द्वारपाल का अंकन हुआ है। पीठ पर नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा में संवत् 1357 फाल्गुण सुदि 8 शुक्रवार (1300 ईस्वी) के दो पंक्तियों के लेख में लंवकंचुक–अन्वय के साधु नारायण एवं वरम्हदेव द्वारा प्रतिष्ठा करवाने का उल्लेख हुआ है।

2. पार्श्वनाथ–पंचतीर्थी: इस प्रतिमा में भी मूलनायक पद्मासनस्थ जिन पार्श्वनाथ सिरोभाग पर सात सर्पफणों की छत्रावली से आच्छादित पद्मासन मुद्रा में साधारण पीठ पर आसीन हैं। मूलनायक जिन के तोरणबद्ध परिकर में चार लघुकाय जिन उपर्युक्त प्रतिमा के समान ही निरूपित हैं। पीठ पर सांकेतिक रूप में नवग्रहों और एक स्थानक द्वारपाल का अंकन हुआ है। वर्तमान स्थिति में यह प्रतिमा काफी क्षरित हो चुकी है। इस प्रतिमा के पृष्ठभाग पर नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण सम्वत् 1358 वैशाख सुदि 3 बुधवार (1301 ईस्वी) के एक पंक्ति के लेख में साधु रतनु एवं उनकी पत्नी हिरा का उल्लेख हुआ है।

3. पार्श्वनाथ: लगभग 2 इंच ऊँचाई की इस प्रतिमा में पद्मासनस्थ जिन पार्श्वनाथ सिरोभाग पर सात सर्पफणों के छत्र से सज्जित साधारण आसीन पर स्थापित हैं। आसन पर नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा में अंकित सम्वत् 1388 ज्येष्ट सुदि 9 गुरुवार (1331 ईस्वी) के तीन पंक्तियों के लेख में मात्र तिथि ही पढ़ी जा सकी है।

4. पार्श्वनाथ (चित्र 4): इस प्रतिमा में जिन पार्श्वनाथ सिरोभाग पर सात सर्पफणों की छत्रावली से आच्छादित पद्मासन मुद्रा में साधारण पीठ पर आसीन हैं। पीठ के दायीं ओर द्विभुजी यक्ष धरणेन्द्र एवं बायीं ओर यक्षी पद्मावती ललितमुद्रा में प्रदर्शित हैं। पीठ पर सांकेतिक रूप में नवग्रहों और स्थानक द्वारपाल का अंकन हुआ है। पृष्ठभाग पर नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा के दो पंक्तियों के सम्वत् 1412 ज्येष्ट सुदि 12 शनिवार (1355 ईस्वी) तिथियुक्त लेख में काष्ठासंघ के अन्तर्गत इक्ष्वाकु वंश के साधु वेद्दरसी की पत्नी गाइति एवं उनके पुत्रों धरमू व करमू का उल्लेख हुआ है।

5. पार्श्वनाथ–पंचतीर्थी: इस प्रतिमा में जिन पार्श्वनाथ सिरोभाग पर सात सर्पफणों की छत्रावली से शोभित पद्मासन मुद्रा में साधारण पीठ पर विराजमान हैं। उनके तोरणबद्ध परिकर में चार लघुकाय जिनों में से ऊपर के दो पद्मासन मुद्रा में और नीचे के दो कायोत्सर्ग मुद्रा में निरूपित हैं। पीठ पर सांकेतिक रूप में नवग्रहों और एक द्वारपाल का अंकन हुआ है। इस प्रतिमा में यक्ष–यक्षी का अंकन नहीं हुआ है। पीठ पर 4 पंक्तियों के नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा में अंकित सम्वत् 1443 ज्येष्ट सुदि 13 बुधवार (1386 ईस्वी) के लेख में जैसिढी के पुत्र दौरम साह का उल्लेख हुआ है।

6. त्रितीर्थी (चित्र ५): इस प्रतिमा में तीन जिनों को कायोत्सर्ग मुद्रा में सादी पीठ पर खड़ा दिखाया गया है। जिनों के लांछन न होने के कारण उनकी पहचान नहीं हो सकी है। तीनों जिनों के सिरोभाग पर त्रिछत्र का अंकन हुआ है। इस प्रतिमा के पृष्ठभाग पर 5 पंक्तियों के नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा के सम्वत् 1474 माघ सुदि 13 (1417 ईस्वी) के लेख में काष्ठासंघ के भट्टारक श्री क्षेमकीर्ति के आम्नाय में साधु वीरदौ की पत्नी सुरपी, उनके पुत्र अभैद्यौ व पुत्रवधु रैगो, उनके पुत्र वसावणु का उल्लेख हुआ है।

7. पार्श्वनाथ (चित्र 6): इस प्रतिमा में भी पद्मासनसस्थ जिन पार्श्वनाथ सिरोभाग पर सात सर्पफणों के छत्र से आच्छादित ऊँची एवं सादी पीठ पर विराजमान हैं। पीठ पर नागरी लिपि एवं संस्कृ त भाषा में अंकित ४ पंक्तियों के सम्वत् 1554 वैशाख सुदि 3 (1497 ईस्वी) के लेख में काष्ठासंघ के भट्टारक श्री यशसेन के आम्नाय में गोयल गोत्र के साधु अल की पत्नी धोरानसी, उनके पुत्र साधु वालप व पुत्रवधु जातपसी, उनके पुत्रों भोजा, गभा, कमा एवं भोजा की पत्नी कानवु द्वारा नित्य प्रणाम–निवेदन का उल्लेख हुआ है।

8. चंद्रप्रभ: इस प्रतिमा में 8वें जिन चंद्रप्रभ पद्मासन मुद्रा में ऊँची पीठ पर आसीन हैं। पीठ पर उनका लांछन 'चंद्र' अंकित है। पीठ पर २ पंक्तियों के नागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा के सम्वत् 1952 माघ सुदि 5 (1895 ईस्वी) के लेख में काष्ठासंघ के भट्टारक श्री मुनींद्रकीर्ति के आम्नाय में बाबू छेदीलाल द्वारा वाराणसी में स्थापना करवाने का उल्लेख मिलता है।

9. पार्श्वनाथ: इस प्रतिमा में पद्मासनस्थ जिन पार्श्वनाथ सात सर्पफणों के छत्र से शोभित ऊँची एवं सादी पीठ पर आसीन हैं। यह प्रतिमा लेखविहीन है और लगभग 15वीं शती ईस्वी की निर्धारित की जा सकती है।

10. पार्श्वनाथ: इस प्रतिमा में पद्मासन जिन पार्श्वनाथ सिरोभाग पर सात सर्पफणों की छत्रावली से शोभित ऊँची एवं साधारण पीठ पर विराजित हैं। यह प्रतिमा लेखविहीन है और लगभग 17वीं शती ईस्वी की निर्धारित की जा सकती है।

11. पार्श्वनाथ: इस प्रतिमा में पद्मासन जिन पार्श्वनाथ सिरोभाग पर सात सर्पफणों के छत्र से आच्छादित ऊँची एवं सादी पीठ पर विराजमान हैं। यह प्रतिमा लेखविहीन है और लगभग 17वीं शती ईस्वी की प्रतीत होती है।

सन्दर्भ सूची

1. चित्र 1– कायोत्सर्ग जिन, संवत् 1234, अकोड़ा https://acrobat.adobe.com/id/urn:aaid:sc:AP:737dd60d-5fc5-43bb-9a8c-439955cd015b
2. चित्र 2– पद्मासन पार्श्वनाथ, संवत् 1548, अकोड़ा https://acrobat.adobe.com/id/urn:aaid:sc:AP:6278df2d-3e1d-486b-8898-dafb9f2842e0
3. चित्र 3– पार्श्वनाथ–पंचतीर्थी, संवत् 1357, अकोड़ा https://acrobat.adobe.com/id/urn:aaid:sc:AP:57fa39a8-9a97-4330-85cb-300265899390
4. चित्र 4– पार्श्वनाथ, संवत् 1412, अकोड़ा https://acrobat.adobe.com/id/urn:aaid:sc:AP:96edcc91-d6cf-403c-8cef-8178f87f6561
5. चित्र 5– त्रितीर्थी, संवत् 1474, अकोड़ा https://acrobat.adobe.com/id/urn:aaid:sc:AP:c21e5a63-1a0e-4873-9e70-a2ee5f85ef65
6. चित्र 6– पार्श्वनाथ, संवत् 1554, अकोड़ा https://acrobat.adobe.com/id/urn:aaid:sc:AP:1bf76433-d28e-460d-ad0a-ef33189fdd38